तुलसी प्रज्ञा १९९४ ०१ (फोल्डर नं. ०२४५२१)

सम्पादक – डॉ.दशरथ सिंघ, डॉ.देवनारायण शर्मा, डॉ.के.कुमार, डॉ.राय अश्विनी कुमार

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

रतनपालचरित में बिम्बात्मकता - राय अश्विनीकुमार---------- २६३

जैन – संस्कृत वाडमय के ऐतिहासिक महाकाव्य - केशव प्रसाद गुप्त ---------- २७७

नाट्यदर्पण में मौलिक चिन्तन - कृष्णपाल त्रिपाठी ---------- २९१

प्रश्न – व्याकरण में अहिंसा का स्वरुप - हरिशंकर पाण्डेय ---------- ३०७

श्वेताम्बर – परम्परा का चन्द्रकुल और उसके प्रसिद्ध आचार्य - शिव प्रसाद ---------- ३१९

ध्यान – द्वात्रिशिका में ध्यान का स्वरुप - समणी चैतन्यप्रभा ---------- ३४५

कालूयशोविलास में चित्रात्मकता - समणी सत्यप्रज्ञा ---------- ३५३

आचार्यश्री महाप्रज्ञ का साधनादर्शन - समणी स्थितप्रज्ञा ---------- ३६७

'स्थानांग' में संगीस कला के तत्त्व - निर्मला चोरडिया---------- ३७५

'तुलसी प्रज्ञा' के खण्ड १८ व १९ की लेख सूची - परमेश्वर सोलंकी ---------- ३८९

Laboratory Counselling in Distance Education - R. K. Mithal ---------- 185

The Solutions of World Problems from jaina perspective – Sagarmal Jain ---------- 189

Non – violence of the Weak and Non – violence of the Brave - Sampooran Singh---------- 203

The prospect of continuity of life after death in Charvak system of Philosophy - Dashrath Singh ---------- 217

List of Article published in Tulsi Prajna Vol. XVIII& XIX - Parmeshwar Solanki---------- 225

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org